छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदाबाजार अंचल के पर्यटन स्थल

(छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन)

Aastha Pandey[1] Dr. Pradeep Kumar Kesharwani[2]

[1] *Research Scholar, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh*

[2] *Research Guide, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh*

मदकू द्वीप (प्राचीन व ऐतिहासिक महत्व)

भौगोलिक परिदृश्य

"मदकू द्वीप" छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.8369^{0}N,81.9501^{0}E, पर स्थित है जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार – भाटापारा से दूरी लगभग 40 किमी. है।

खोज के विषय का विवरण :–

यह स्थान बिलासपुर के बैतलपुर गाँव के समीप स्थित है यह जो शिवनाथ नदी पर स्थित एक रहस्यमयी द्वीप है जो शिवनाथ नदी को दो भागों में विभक्त करता है चूंकि यह द्वीप मुंगेली जिले का हिस्सा माना जाता हैं। परन्तु यह कुछ हद तक भाटापारा क्षेत्र के अंतर्गत भी आता है अर्थात यह बलौदाबाजार व मुंगेली जिले को मिलाता है। यह अत्यन्त प्राचीन व ऐतिहासिक स्थल माना जाता है।

यहाँ स्थित 19 मंदिरो का समुह जो 11 वीं सदी के कल्चुरी कालीन पुरावैभव की कहानी बयां करते है संभवत **इ**से माडुक्य ऋषि की तपों स्थली कहा जाता था। तथा यहीं पर ऋषि ने "मुण्डकोउपनिषद" की रचना की थी। सत्यमेंव जयते इसी महाकृति के प्रथम खंड का छठवां मंत्र है। यहां खुदाई के दौरान 6 शिव मंदिर, 11 स्पातीलिंग, एक–एक मंदिर क्रमशः उमा महेश्वर और गरूडारूढ़ लक्ष्मी – नारायण मंदिर मिले है। खुदाई के बाद वहां बिखरे पत्थरों को मिलाकर मंदिरों का रूप दिया गया। इसे छ.ग. का "मोहनजोदड़ो" भी कहा जा सकता है। मदकू द्वीप एक नहीं बल्कि दो धर्मों के आस्था का केन्द्र है यहॉ प्रत्येक वर्ष मंसीही मेला का आयोजन होता है। यह 1 सप्ताह का होता है जिसमें दूर–दूर से ईसाई धर्म के लोग शामिल होते है। यहां पर्यटक नौका विहार का आनंद भी लेते है। यहां के वनों में सिरहुट सदाबहार वृक्ष प्रमुंख है। 1959–60 की Indian Epigraphy Report के अनुसार यहां से दो प्राचीन शिलालेख प्राप्त हुए है। प्रथम ब्राम्हींलिपि में अंकित है तथा दुसरी शंखलिपि में है। परन्तु नदी के किनारे पर रेत माफिया आसपास के जगहों को खोखला कर रहे है। जो इस मदकू द्वीप के लिए बड़ा खतरा बना हुआ ।

अतः छत्तीसगढ़ के इस खजाने को बचाने हेतु बलौदाबाजार व मुंगेली दोंनो जिलों को मिलकर इसका संरक्षण करना अनिवार्य है। Indian Epigraphy Report के अनुसार– स्पष्टतः यह द्वीप अत्यन्त ही रमणीय स्थल है जो पानी व वनों से घिरा हुआ अत्यन्त सुन्दर द्वीप है। परन्तु इसे और अधिक विकास की आवश्यकता है।

नारायणपुर (कसडोल) प्राचीन शिंव मंदिर

भौगोलिक परिदृश्य

छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदाबाजार–भाटापारा जिला मुख्यालय से नारायणपुर (कसडोल) की दूरी लगभग 45 कि.मी. है। तथा राजधानी रायपुर से 100 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

खोज के विषय का विवरण :–

नारायणपुर गाँव छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदाबाजार जिले के कसडोल तहसील में स्थित है। यह कसडोल क्षेत्र का छोटा सा गाँव है। यहॉ पर प्राचीन शिव मंदिर स्थित है। यह मंदिर महानदी के किनारे पर स्थित है। अतः पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यह स्थान अधिक प्रसिद्ध नहीं है। यह बलौदाबाजार से 45 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

यह मंदिर प्राचीन व पुरातात्विक स्मारक है। इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा एक संरक्षित स्मारक का दर्जा प्राप्त है। यह लगभग 7 वीं से 8 वीं शताब्दी का माना जाता है। यहाँ पर दो मंदिर है। एक बड़ा मंदिर है व एक छोटा मंदिर है। मंदिरों के अंदर बहुत सी प्राचीन मूर्तियाँ है। जो खुदाई के दौरान पायी गयी है। यहाँ पर एक छोटा सा संग्रहालय भी स्थित है। जिसमें बहुत सी मूर्तियों को रखा गया है। बड़ें मंदिर में एक शिवलिंग है। यहाँ पर शिवरात्रि में श्रद्धालुओं की भीड़ होती है। मंदिर के सामने ही पर्यटको के मनोरंजन के लिए एक उद्यान भी स्थित है। इस मंदिर का निर्माण बलुआ पत्थरो से किया गया हैं।

यह मंदिर अत्यन्त ही रमणीय है, इसमें बनी कलाकृतियाँ लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस मंदिर से थोड़ी ही दूरी पर महानदी का तट है जो इस क्षेत्र को और भी आकर्षक बनाता है। स्पष्टतः यह क्षेत्र लोगों के लिए एक अच्छा पर्यटक स्थल है। यहाँ का संपूर्ण परिदृश्य लोगों को आकर्षित करता हैं। परन्तु पर्यटन के दृष्टिकोण से इस क्षेत्र को और अधिक विकसित किया जाना चाहिए। यहाँ पर महानदी शिवरीनारायण से आती है व सिरपुर को ओर जाती है महानदी, प्राचीन मंदिर व उद्यान का यह संगम एक रमणीय स्थल का निर्माण करते है।

यहां के प्राचीन शिंव मंदिर के विषय में यह माना जाता है कि यह महान कलचुरियों के शासनकाल के दौरान बनाया गया था।

यहां स्थित शिव मंदिर अपनी स्थापत्य कला के लिए मशहूर है मंदिर की कारीगरी काफी उन्नत है। यह पूर्वाभिमुखी शिवमंदिर, जिसका निर्माण लाल व काले बलुवा पत्थरों के इस्तेमाल से किया गया है। पत्थरों को तराश कर बेहतरीन से बेहतरीन प्रतिमा को उसमें उकेरा गया है। जो उस समय कि उन्नत कारीगरी को दर्शाती हैं। यह मंदिर एक बड़े से चबुतरे पर 16 स्तंभो पर टिका हुआ है। मंदिर के गर्भ गृह में प्राचीन शिवलिंग विद्यमान है। जो किसी मंदिर के शिखर के समान दिखाई पड़ता है। प्रवेश द्वार पर अनेक देवी–देवताओं

की प्रतिमा का चित्रांकन किया गया है। मंदिर के बाहर दिवारों पर विष्णु के अवतारों का वर्णन किया गया है। साथ ही यह गन्धर्व में तलाशा गया है। जो खजुराहो के मंदिर के समान ही दिखाई पड़ता है।

मुख्य मंदिर के बगल में ही एक छोटा मंदिर स्थित है। जिसका प्रवेश द्वार मुख्य मंदिर से ठीक विपरीत है। जिसके अन्दर कोई मूर्ति नहीं है। मंदिर के आसपास खुदाई से प्राप्त हुई मूर्तियों को एक छोटा सा संग्रहालय बनाकर स्थापित किया गया हैं। इस मंदिर पर कभी भूकम्प के झटके आये होगें जिसके कारण मंदिर का कुछ भाग जमीन की सतह की ओर घुस गया है। परन्तु मंदिर आज भी अच्छी स्थिति में है। अतः स्पष्टतः इस प्रकार के प्राचीन मंदिरो को अधिक संरक्षण व विकास की आवश्यकता हैं।

lkseukFk eafnj ¼ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल)

भौगोलिक परिदृश्य

"सोमनाथ मंदिर" छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.6265^0N , 81.7056^0E पर स्थित हैं जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार– भाटापारा से दूरी लगभग 50 किमी हैं।

खोज के विषय का विवरण :–

सोमनाथ छत्तीसगढ़ में स्थित है। यह स्थल, धरसींवा से आगे सिमगा से 10 किमी. दूरी पर बांयी ओर खारून नदी और शिवनाथ नदी का संगम सोमनाथ तीर्थ स्थल के नाम से प्रसिद्ध है। प्रमुख मार्ग से 3 किमी. दूरी पर खारून नदी के तट पर लखना ग्राम है और लखना से एक किमी. दूर सोमनाथ का तीर्थ स्थल है। चूंकि यहॉ पर खारून व शिवनाथ नदी का संगम है। अत :– यह स्थान अत्यन्त सुरम्य व प्राकृतिक वातावरण से सुसज्जित है। यहॉ पर 3 फीट ऊंची शिवलिंग कई सालों पुराना है और खुदाई द्वारा प्राप्त हुआ है। यह मंदिर दोनों नदियों के संगम पर ऊँचे टीले पर स्थित है।

इस स्थान पर श्रावण सोमवार के महीनें में सैकड़ो भक्त आते है। तथा वर्ष भर सैकड़ों पर्यटक यहॉ के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेने आते है। यहॉ के मंदिर में शिव परिवार पार्वती देवी , गणेश जी, कार्तिकेय जी एवं नन्दी की प्रतिमाएं स्थापित है। उत्खनन से प्राप्त महादेव, शिवलिंग को ही मंदिर में स्थापित किया गया है।

इस संगम स्थल के किनारे मछुआरों का एक समूह रहता है जो पर्यटकों को तीर्थ स्थल पर अपनी नौकाओं द्वारा ले जाते है। संगम के मध्य एक मंदिर है। जहां शिवलिंग व हनुमान जी की मूर्तियाँ है। यहाँ पर्यटक नौका विहार का भी आनंद उठाते है। सोमनाथ तीर्थ स्थल, बलौदाबाजार का एक मनोहारी पर्यटन स्थल है।

यह स्थल प्राकृतिक छटाओं से घिरा हुआ हैं तथा नदियों के साथ मिलकर यह दृश्य और भी रमणीय दिखाई पड़ता हैं। यहाँ पर एक उद्यान भी स्थित है, जहाँ बड़ी संख्या में लोग पिकनिक मनाने आते हैं। यहाँ शिव जी का एक प्राचीन मंदिर भी स्थित है। जिसे और संरक्षण की आवश्यकता है। यहाँ की भव्यता अत्यन्त मनमोहक दिखाई पड़ती है। यहाँ प्रतिवर्ष श्रावण मास के मेले में सैकड़ों श्रद्धालु एकत्रित होते है। तथा मेले का आनंद लेते है। यह एक बहुत ही भव्य व रमणीय पर्यटक स्थलों मे से एक है

देव हिल्स (ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल)

खोज के विषय का विवरण :–

भौगोलिक परिदृश्य

"देव हिल्स" छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.4350^{0}N, 82.5643^{0}E पर स्थित है। तथा जिला मुख्यालय बलौदाबाजार–भाटापारा से लगभग 50 किमी. की दूरी पर स्थित है।

यह स्थान बलौदाबाजार जिले के कसडोल क्षेत्र से लगभग 40 किमी की दूरी पर स्थित है। यह क्षेत्र पूर्णतः प्रकृति की गोद में स्थित है। यह पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। यहाँ का प्राकतिक दृश्य अत्यन्त ही मनमोहक है। यहाँ का प्राकतिक सौन्दर्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ का दृश्य अत्यन्त हो आनंददायक है। यहाँ पर रिसार्ट की सुविधा भी उपलब्ध है। जो पर्यटकों को हट व टेन्ट भी उपलब्ध कराते है। यह सप्ताहान्त की छुट्टियों के लिए पर्यटकों का मनपसंद स्थान बना हुआ है। परन्तु देश विदेश से सैलानियों को यहाँ आकर्षित करने हेतु यहाँ और भी सुविधाओं की आवश्यकता है। इसके पहुंच मार्ग को सुगम व सरल बनाना चाहिए।

प्राकृतिक सौन्दर्य यहाँ का गुण व आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ के वनों में अनेक प्रकार के वृक्ष पाये जाते है। अर्थात देव हिल्स एक बहुत ही लोकप्रिय व प्रसिध्द पर्यटक स्थल है।

" प्रकृति के बीच एक अदभुत जगह " इस स्थान को और अधिक शानदार बनाने हेतु यहाँ ट्री हाऊस डायनिंग रूम बनाया गया हैं। बच्चों के खेलने हेतु उद्यान बनाया गया हैं। यहाँ पर्यटकों के आकर्षण हेतु झोपड़ियों का निर्माण किया गया है। तथा पर्यटकों के लिए टेंट की भी व्यवस्था रहती हैं। यहाँ पर शांत वातावरण में प्रकृति का आनंद लिया जा सकता है। यह चारों ओर से सघन वनों से घिरा हुआ है। इसलिए अभी इस स्थान पर हाथी के झुण्ड़ो का आवागमन बढ गया है। जिससे पर्यटकों को परेशनियों का सामना करना पड़ रहा है।

देव हिल्स पँहुचने का मार्ग अत्यन्त रोमांचकारी है जो जंगलो के बीच से होकर गुजरता है। जहाँ जंगली जानवरों का भी आवागमन होता रहता है। यहाँ के प्रकृति का नजारा अत्यन्त अदभुत दिखाई पड़ता है। छत्तीसगढ़ के आदिवासियों द्वारा अतिथ्य का लाभ उठाया जा सकता है। यहाँ आकर एक अलग ही अनुभव की अनुभूति प्राप्त होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. छत्तीसगढ़ जिला दर्शन व सामान्य ज्ञान – उपकार प्रकाशन (डॉ. एम. एस. सिसोदिया, आर. के. सिंह).
2. https://www.santrip.net>
3. पत्रिका – समाचार पत्र।
4. https:// balodabazar.gov.in
5. etvbharat.com (Internet)

"पूर्व में प्रकाशित शोध–पत्रों का विवरण निम्नलिखित है:

1. छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन 2025 IJRTI | Volume 10, Issue 3 March 2025 | ISSN: 2456-3315
2. छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन International Journal of Aquatic Science ISSN: 2008-8019 Vol 12, Issue 02, 2021
3. छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन International Journal of Aquatic Science ISSN: 2008-8019 Vol 13, Issue 01, 2022